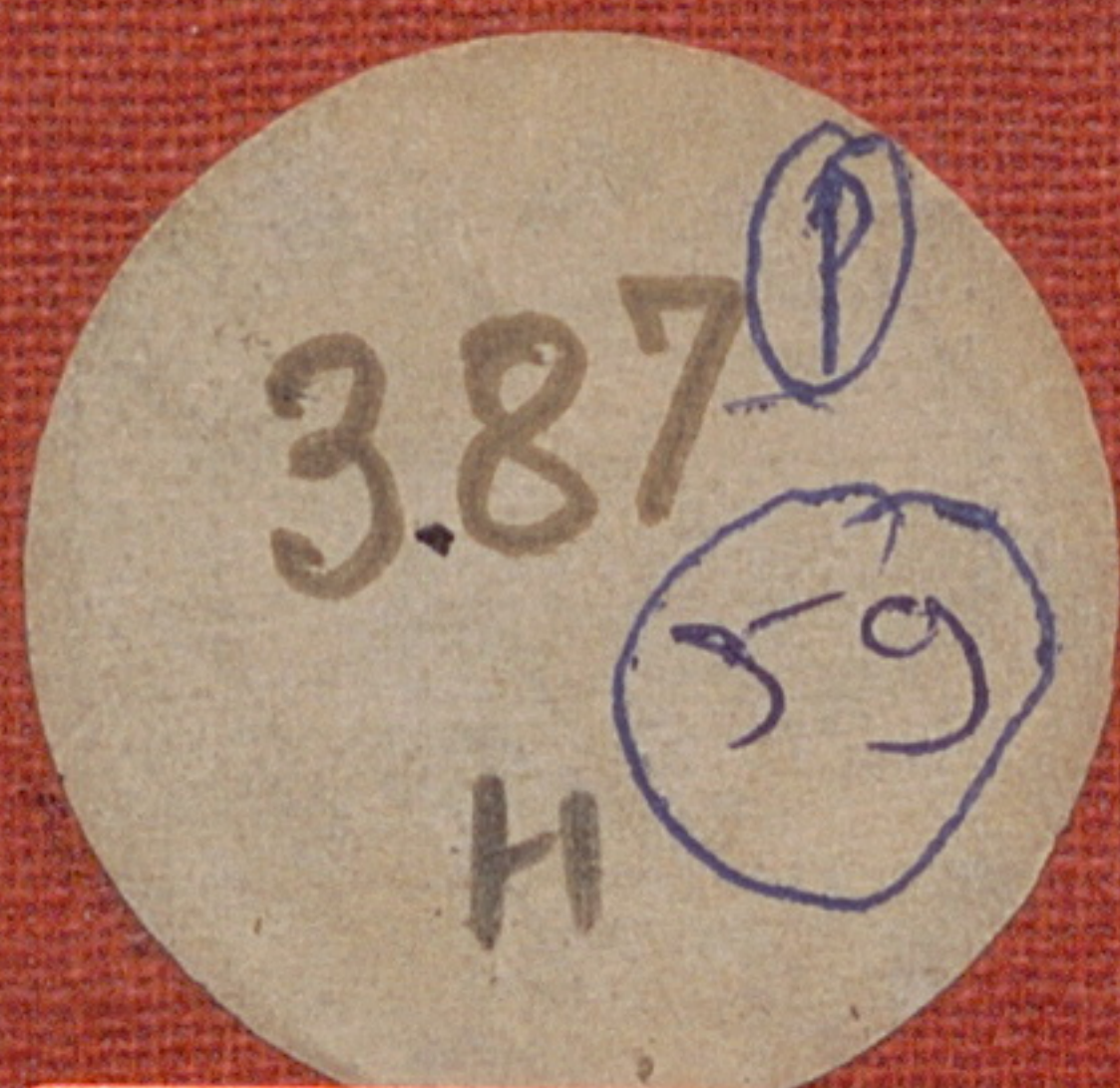




MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No. _____

अवधि सं० Acc. No. _____

387

[Handwritten signature]

2 181

891.431

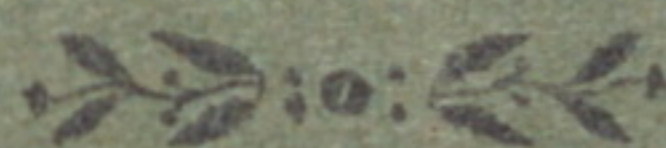
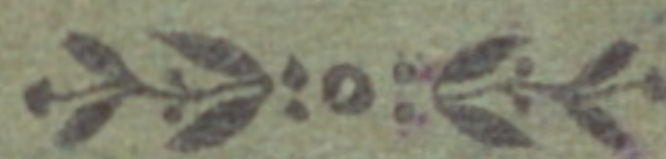
A r 54 D

Desh Bhagti Ki Pukar

श्री लाजपति शहीद माला का चौथा पुष्प ❀



देशभक्ति की पुकार



भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

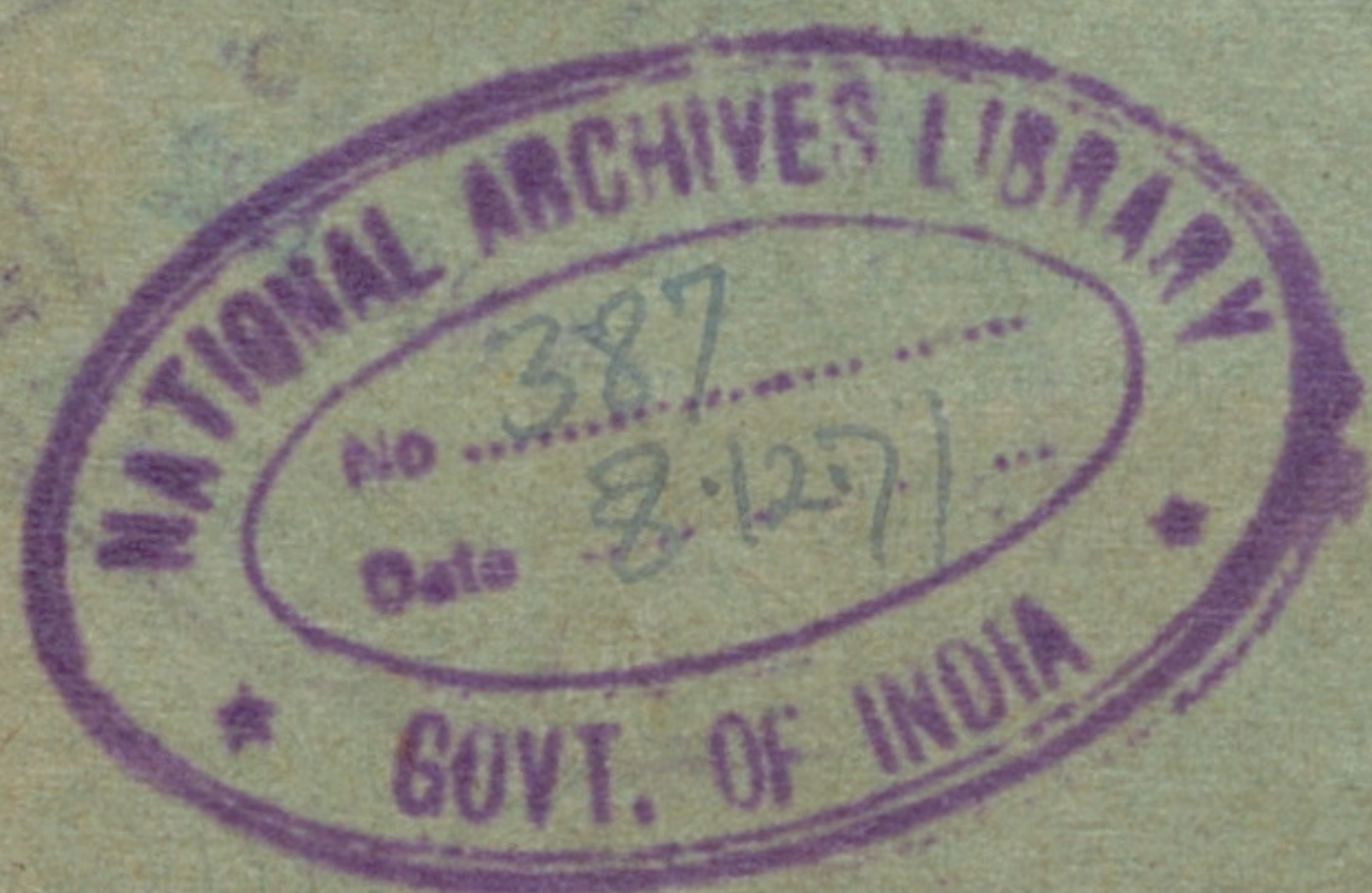
ले० व प्र०-श्रीमोहनलाल 'अरमान' कानपुर ।

प्रथमवार)

सर्वाधिकार स्वरक्षित

मूल्य ॥॥

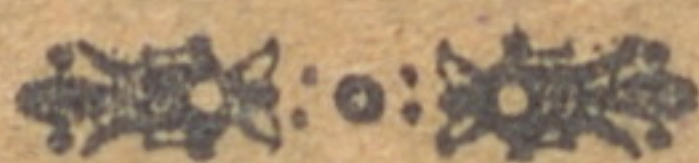




बन्देमातरम्

Gout-

देशभक्ति की पुकार



॥ ईश बन्दना ॥

जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
करत दूर मोह जाल, रहत एक रस त्रिकाल ।
दीनन पर हो दयाल, हरत जकत फासी ॥१॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
लसत मुकट मय सुभाल, लोचन लुब्ध निध विशाल ।
करत लणक में निहाल, मन्द मन्द हांसी ॥२॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
पुरषोत्तम नाम लेत, आवत जग दरश हेत ।
बान प्रस्थ ग्रहस्थ रुज, पीत पत उवासी ॥३॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥
भारत संकट कराल, बीजे जगपति निकाल ।
बिनय ये मोहन, दयाल, अन्तिम सुखरासी ॥४॥
जयति सर्व शक्तिमान, विश्व उर निवासी ॥



गजल

अपने हुवा जो दर्द सर ख्याले वतन है आज कल ॥
 जब से बने हैं हम गुलाम, मुश्किल मुशीबतें तमाम ।
 पूछो न हाले दिल कोई रज्जो महन है आजकल ॥अपने॥
 जुल्मो सितम के दौर ये, कब तक रहेंगे झोर ये ।
 दुशमन हमारे मुक़्त का चर्खें कुहन है आजकल ॥अपने॥
 कैसी अजीब दिल्लगी, काबिल रहम है जिन्दगी ।
 उलझन है दिलको कलनहीं कैसी जलन है आजकल ।अपने
 गैरी स्वराज क्या मिला, नांदा समझ तो लो जरा ।
 'अरमां, नशीबते' वहीं चैनो अमन है आजकल ॥अपने॥

गजल

गांधी इर्विन समझौता भी क्या खूब हुआ है
 लंदन में तहलका है गजब शोर मचा है
 शेर-करते हैं मानचेस्टर वाले ये शिकायत
 कैसा स्वराज बन्द न हो अपनी तिजारत
 ये वायकाट माल विदेशी का बुरा है । लंदन० ।
 शेर-मिस्टर की औधों खोपड़ी रीडिंग के वही खयाल
 स्पीच सुनके बेहतरह है मुक़्त को मलाल
 क्या अक़्क का दिवाला निकल उनके गया है । लंदन० ।
 शेर-कोई सुख आंख करके दिखाते हैं खौफ डर
 करने को दमन अब भी तुले बैठे हैं अफसर
 मालूम नहीं इन्किलाब होने को क्या है ॥लंदन०॥
 शेर-,अरमां, लिखा है अपने मुक़्तहर में और क्या
 देखेंगे गोलमैज़ का चुपचाप तमाशा
 समूज्य यादियों के चढ़ा वही नशा है ॥लंदन०॥

गज़ल

अभी और फितने सितमगर उठेंगे ॥

जिषाः होने वाले भी हँस कर उठेंगे ॥१॥

अगर इम्तहां का कोई वक़्त आए ।

हजारों लिये नौजवां सर उठेंगे ॥२॥

मिट्टी जुल्म जालिम का दुनियां से देंगे ।

वो जब क़स्द कर दिल के अन्दर उठेंगे ॥३॥

तमासा कयामत का होगा नज़र में ।

क़फ़न बांधे सर जब बहादर उठेंगे ॥४॥

किये क़स्द बैठे हैं ,अरमान, दिल में ।

मिट्टीते हुये जुल्म अक़सर उठेंगे ॥५॥

गज़ल

पिलादे ज़ाम जरा मुक़ के मयख़ाने की ।

फिर ज़रूरत न रहे साकिशा पैमाने की ॥

सरूर आँखों में वो रङ्ग गुलाबी आए ।

मस्त बहके जो अशं देख ले मस्ताने की ॥

निशार मुक़ की खिदमत में जां अगर हो मेरी ।

फिर तमन्ना न मुझे दैरो हरम जाने की ॥

जुल्म जालिम से परेशां न मुज़तरिब थे हम ।

चर्खा तुझको क्या पड़ी है मेरे बहकाने की ॥

क़फ़स में करके मुझे यौ न धमकियां दे तू ।

याद करले मेरे नालों में असर आने की ॥

सितम की तेरा जफ़ा मुर्व फ़ाम है ,अरमां, ।

हबिस है दिल की शशदत पे खूँ बसाने की ॥

गज़ल

जालिमों अब जुल्म ढाना छोड़ दो ।

वे गुनाहों को सताना छोड़ दो ॥

चन्द दिन की साहबी कैसा गरूर ।

सुख आँखें तुम दिखाना छोड़ दो ॥

खूने नाहक से नहीं होगा भला ।

जोर खज़र आजमाना छोड़ दो ॥

ज़ार शाही का तमाशा क्या हुवा ।

तुम किसी का खूँ बहाना छोड़ दो ॥

एक नजर ढालो जमाने की तरफ ।

ढग अपना जालिमाना छोड़ दो ॥

जब मिलो मोहन, मुहब्बत से मिलो ।

पेश देअदबी से आना छोड़ दो ।

संसार स्वार्थ का है साधन. विश्वास करे किस का कोई ।

जब दोस्त बन गये हैं दुश्मन, विश्वास करे किस का कोई ॥

जो कल हम दर्द हमारे थे, जिनको हम दिल से प्यारे थे ।

उनके है जिगर में आज जलन, विश्वास करे किस का कोई ॥

माशूक थे हम दिलवर जिन के, जो साथी थे इस जीवन के ।

दे गये वड़ा अब रखो महन, विश्वास करे किस का कोई ॥

उलफत का लिये दिलमें हशरत, दिलको नहीं कल देखें सूरत ।

वो आज शक है शोलाजन, विश्वास करे किस का कोई ॥

दुनियांको क्या, अरमां, समझें, कुदरत उसकी दुनियां समझें ।

अशआर तुम्हारे सुन मोहन, विश्वास करे किस का कोई ॥

जब दोस्त बन गये हैं दुश्मन, विश्वास करे किस का कोई ।

बहर तबील

गफ़लते ख़वाब से नवजवानो उठो ।

मुक्त आजाद अपना बनाते चलो ॥१॥

दिल में है दर्द कौमी अगर आपके ।

हिन्दू मुस्लिम को भगड़ा मिटाते चलो ॥२॥

क्यों बनो, मीर जाफ़र, ओ जयचन्द तुम ।

क्यों जमाने को साहब हँसाते चलो ॥३॥

बस करो दस्त बस्ता की ये अर्ज है ।

यौ न फ़ितने ग़ज़ब के उठाते चलो ॥४॥

कोई इज़ात गुलामों की होती भी है ।

ये समझ लो जरा शर्म खाते चलो ॥५॥

कोई मजहब गुलामों का होता नहीं ।

ये मुनासिब है सबको सुनाते चलो ॥६॥

तर्फ़ स्वराज मंजिल के अपना कदम ।

ओ जबां मर्द बीरों बढ़ाते चलो ॥७॥

हिन्द में होने वाला ही स्वराज है ।

मेरे मुश्फ़क़ जरा ये बताते चलो ॥८॥

विश्व में कांति की भावनाये लिये ।

शांति के तुम उपासक कहाते चलो ॥९॥

धर्म अपना अहिंसा समझते हुवे ।

खूने नाहक से सबको बचाते चलो ॥१०॥

हिन्द की शान में फर्क आने न दो ।

क्यों किसीका यूँ तुम खूँ बहाते चलो ॥११॥

मेरे, अरमान, हिन्दू मुस्लिमान हैं ।

दोस्त मोहन मुहब्बत निभाते चलो ॥१२॥

गज़ल

हाले वतन न पूछो पे रहनां हमारा ।

मिटने ही वाला अब है नामों निशां हमारा
राहत न ख्याब में अब होगी नशीब मुझ को ।

दुश्मन हैं खूँ का प्यासा ये आसमां हमारा ॥
कुछ और तर्फ पीछे देखे जो गौर करके ।

पुर सब्ज ये चमन था हिन्दूनां हमारा ॥
पढ़ते थे इल्म आकर यां गौर मुझ वाले ।

वा दिन थे जबबना था कायल जहां हमारा ॥
स्वराज वो खुशी से देंगे न हिन्द को अब ।

जब तक न लेंगे मोहन, कर इमत्हां हमारा ॥

गज़ल

साम्यवादी हिन्द अपना अब बनाना चाहिये ।

आत्म बल से कर विजय सुख शांत पाना चाहिये ॥१॥
चाहिये सीने पे लेना सख्तियों के धार को ।

जुल्म सहकर जुल्म की हस्ती मिटाना चाहिये ॥२॥
जेल हो एक तीर्थ है अपनी तपस्या के लिये ।

बक्त पर हम सब को मिलकर जेज जाना चाहिये ॥३॥
मुन्तिलाये रंजो गम हम मुल्क अपने में रहें ।

नवजवानों कुछ तो तुमको खयाल लाना चाहिये ॥४॥
जंगे मेदां में बड़ो बलिदान होने के लिये ।

हुक्म गांधी का तहे दिल से बजाना चाहिये ॥५॥
है गुलामी में नहीं कुछ जिन्दगानी का मजा ।

मुझ को आजाद ही करके दिखाना चाहिये ॥६॥
गर मजहबी भगड़ों को करदे नजर अंदाज हम ।

कौमी नारे हमको अब ,अरमां, लगाना चाहिये ॥७॥

खयाल बहर लँगड़ी

न चश्म कश से देख। इन्हें ये तो हैं खाक़ दानी के मजे ।
 नशाब होंगे, इन्हीं से तख़्त सुलेमानी के मजे ॥
 तुम्हें न हो मंजूर रब्बअरनी के लन्तरानी के मजे ।
 मिलेंगे हमदम, कभी गुफ्तार नागहानी के मजे ॥
 बहुत किए बरबाद इश्क जाना में सुलतानी के मजे ।
 न कयों मिलेंगे, उसे हमदम को पासवानी के मजे ॥
 न ऐसा घबड़ा श्री मुज़तिरब दिल मिले जो हैरानी के मजे ॥१॥
 वो क्या विचारा समझ सके हज़रते हुकमरानी के मजे ।
 जिसने लिए हैं, हमेशा तसव्वरे जानी के मजे ॥
 खयाल क़तबे का करना उलक़त में नादानी के मजे ।
 दिले यार में, मिले मुझको भी महमानी के मजे ॥
 ब गौर इन सब के खयाल लाना है जिन्दगानी के मजे ॥२॥
 न खुश हो अब वायदा पे पे मुज़तर दिल आसानी के मजे
 मिलेंगे तुझको, अभी मुशकिल से कद्रदानी के मजे ॥
 चले कब्र को यास न कुछ देखे जहान फानी के मजे ।
 चखें सितमगर, इन्हें कहते हैं जिन्दगानी के मजे ॥
 लिवास की परवाह किसे लेते हैं उरयानी के मजे ॥३॥
 फसा के दिज जुल्फ में जरा देखौ खीचा तानी के मजे ।
 चीने ज़बी के, अजी नूरानी पेशानी के मजे ॥
 तुम भी ता लो देख नज़र से रङ्ग आफ़रानी के मजे ।
 इलाही मेरे, चश्म गिरियां में हैं किस पानी के मजे ॥
 लेते हैं, अरमान, रहके दुनियां में मेहरबानी के मजे ।
 नशीब होंगे, इन्हीं से तख़्त सुलेमानी के मजे ॥४॥

खयाल बहर शिकस्ता

उठो १ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक ।
 गुलाम बन कर रहोगे कबतक रहेगा शौके शराब कबतक ॥
 नजन्दुलमैनी में खुद को भूलो, ये कोई दरजा न उन्नती का ।
 जबां मुबारिक से ये सुनादो, जहान में इन्तखाब कबतक ॥
 उठो २ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक ।
 तुम्हारे बच्चे हैं भूखों मरते, लगाओ साहब को डालियां तुम ॥
 हजार लानत तुम्हारे ज़र पर, बने रहोगे नवाब कबतक ॥
 उठो ३ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक ।
 अगर है कुछदिल में दर्द कौमी, तो अपनी हालत की तरफ़ देखो
 बताओ दौलत के दर्द मन्दो, पढ़ोगे लालच काबाब कबतक ।
 उठो ४ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक ॥
 घतन को आजाद है बनाना, तो निकलो मैदानों में शेर बनकर ।
 सवाल ये कौम का है अरमां, न दोगे आखिर जवाब कबतक ॥
 उठो ५ अब भी नवजवानों रहोगे खाना खराब कबतक ।

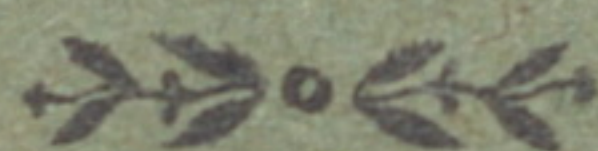
नोट—वर्तमान रहस्य स्वांग मण्डलियों के संचालकों से मेरा ये नम्र निवेदन है कि वो देश की दुःख जनक अवस्था को देखते हुवे अब और गन्दे दुराचार फैलाने वाले तमासों का प्रदर्शन न करें नवयुवकों में राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने के लिये देश कालोन, लोक प्रिय, तमासों का गांव जिले तहसीलों में प्रदर्शन करके पीड़ित राष्ट्र को उठाने में सहायक बने ।

स्व० पंजाब केशरी लाला लाजपति राय की पूर्ण स्मृति में

● श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय ●

दिल चस्प फड़कते हुये सुन्दर मनोहर गानों से परिपूर्ण

पुस्तकों का सूचोपत्र



बलिदान	"	"	"	"	मूल्य	)।।
विशाल हिन्दू संगठन	"	"	"	"	"	)।।
साम्यवाद	"	"	"	"	"	)।।
शहीदे वतन	"	"	"	"	"	)।।
देशभक्त की पुकार	"	"	"	"	"	)।।
क्रांति का पुजारी	"	"	"	"	"	)।।
सोजे वतन	"	"	"	"	"	)।।

नोट—हर जगह गाने वाले प्रचारकों की जरूरत है जो घूम फिर कर जनता में इन पुस्तकों का प्रचार कर सकें कमोशन के अलावा उनको और भी अधिक सहायता मिल सकती है पत्र ब्योहार के लिए जवाबो कार्ड आना आवश्यक है,

पुस्तक मिलने का पता:—

श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय

नौघड़ा—कानपुर ।

शङ्कर प्रेम, नौघड़ा-कानपुर ।